# पटना जिला के ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाली महिलाओं में उनके अधिकारों के प्रति होने वाली जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययनः बिहार राज्य के संदर्भ में

**चाँदनी कुमारी**

**शोध छात्रा, गृह विज्ञान विभाग, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना**

**डॉ० रजिया नसरीन**

**गृह विज्ञान विभाग, रामेश्वर दास पन्ना लाल महिला कॉलेज, पटना सिटी, पटना**

**शोध सारांश**

आज के इस बदलते समय में कामकाजी महिलाएँ अपने विभिन्न मांगों एवं अपने ऊपर होने वाले अत्याचारों के खिलाफ आवाज उठाने में पूर्ण क्रियाशीलता के साथ अपने आप को प्रदर्शित करती चली जा रही है। ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में कामकाजी महिलाओं की विविध भूमिका का निर्वहन उन्हें कम या अधिक भूमिका को संघर्ष की स्थिति में ला देता है। उनके सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक जीवन संबंधी दायित्व उनके कार्य क्षेत्र को प्रभावित करते हैं। महिलाओं के कामकाजी होना उसके आर्थिक अनुकूलता को संबंधित करने में सहायक होती है। ऐसे में उनके (कामकाजी) पारिवारिक स्थिति, बच्चों की शिक्षा-दीक्षा व अन्य सारी परेशानियां भी कम होती चली जाती है। इन कामकाजी महिलाओं में बौद्धिक चिंतन, सोच समझ को अन्य महिलाओं के परिपेक्ष में काफी विकसित होते देखा गया है। इन कामकाजी महिलाओं में समय प्रबंधन के साथ अपने सारे कार्यों व चुनौतियों के प्रति भी पूर्ण तालमेल बनाते हुए देखा गया है। जब यह कामकाजी महिलाएँ अपनी विविध भूमिका में असमायोजन एवं अंतर्द्वंद महसूस करती है, तो अपनी भूमिका को संघर्ष की स्थिति में बनाए रखने में मजबूर हो जाती हैं।

**शब्दार्थः कामकाजी, क्रियाशीलता, परेशानियां, चुनौतियां, प्रबंधन।**

**परिचयः**

स्वतंत्र भारत में आज जो महिलाओं की स्थिति है वह कभी भी प्राचीन समय में महिलाओं को प्राप्त नहीं थी। उस समय महिलाएँ अपने घरेलू कार्य के प्रति ही जिम्मेदार मानी जाती थी। उन दिनों व आज भी कहीं-कहीं संयुक्त परिवार की परंपरा पायी जाती है। ऐसे में परिवार के अंदर के सभी छोटे बड़े कार्य में महिलाओं की ही भूमिका निर्धारित होती थी। आधुनिक युग में महिलाओं की स्थिति में गुणात्मक सुधार हुआ है। महिलाएँ कामकाजी होने के साथ-साथ सफल गृहिणी भी सिद्ध हो रही हैं। यह कामकाजी महिलाएँ बदलते हुए समय में समय प्रबंधन के माध्यम से अपने सभी कार्यों को सफलतापूर्वक करती चली जा रही हैं।

वर्तमान समय में महिला शिक्षा का बढ़ता प्रभाव में क्रमशः उनकी शैक्षिक प्रतिशत में गुणात्मक वृद्धि हुई है। भारत में कुल 64.67% साक्षरता ग्रामीण क्षेत्र में 52.9% व शहरी क्षेत्र में 79.3% रही है। महिला शिक्षा के बढ़ते स्तर ने महिलाओं को चिंतन की दिशा में सोचने को विवश किया, जिससे उनमें कामकाजी होने की भावना के साथ-साथ आत्मस्वावलंबन की भावना का भी विकास हुआ। आज की कामकाजी महिला सभी

क्षेत्रें में पुरुषों के समान पदों पर आसीन है। राजनीतिक सप्ताह का क्षेत्र हो या कार्यालय की कुर्सी, अभिनय अभिव्यक्ति हो या नृत्यांगना का नृत्य, साहित्य का क्षेत्र, आदि सभी क्षेत्रों में इनका विस्तार से जुड़ाव हुआ है।

**उद्देश्यः**

1. कामकाजी महिलाओं के कार्य क्षेत्र में उनकी भूमिका और उनके निजी जीवन में होने वाली समायोजन की स्थिति का ज्ञान प्राप्त करना।
2. कामकाजी महिलाओं के कानूनी अधिकार के ज्ञान को प्राप्त करना।
3. कामकाजी महिलाओं के सशक्तीकरण के उपाय पर ज्ञान प्राप्त करना।

**अध्ययन क्षेत्र :**

बिहार गंगा के मध्य मैदानी भाग में स्थित पूर्वी भारत का राज्य है। इसकी भौगोलिक विस्तार 24°21'10'' से 27°31'15'' उत्तरी अक्षांश के बीच तथा 83°19'50'' से 88°17'40'' पूर्वी देशांतर के बीच स्थित है। उत्तर से दक्षिण बिहार की लंबाई 345 किलोमीटर तथा पूरब से पश्चिम चौड़ाई 483 किलोमीटर है। आयताकार आकृतिवाला वर्तमान बिहार का क्षेत्रफल 94,163 वर्ग किलोमीटर (36,357 वर्ग मील) है। यह भारत के कुल क्षेत्रफल का 2.86% है। क्षेत्रफल की दृष्टि से बिहार भारत का 12वाँ बड़ा राज्य है।

2011 के जनगणना के अनुसार बिहार राज्य की कुल जनसंख्या 10,31,04,637 में 4,98,21,295 महिलाएँ। कुल जनसंख्या में ग्रामीण क्षेत्र में 4,42,67,586 प्रतिशत व शहरी क्षेत्र में 55,53,709 प्रतिशत महिलाएँ निवास करती है। अनुसूचित जाति की कुल जनसंख्या 1,65,67,325 में 7961072 महिला जनसंख्या है। अनुसूचित जनजाति की कुल जनसंख्या 13,36,573 में 6,54,057 महिला जनसंख्या है। साक्षरता की दृष्टि से बिहार, महिला साक्षरता में प्रगति के पथ पर बढ़ चला है।कुल जनसंख्या साक्षरता 5,25,04,553 में 2,08,96,530 महिला साक्षरता है। कुल जनसंख्या साक्षरता दर 61. 80% है जिसमें पुरुष साक्षरता दर पूरे बिहार में 71. 20% जबकि महिला साक्षरता दर पूरे बिहार में 51. 50% है। वही हम देखते हैं कि ग्रामीण में जनसंख्या का साक्षरता 4,48,12,152 है, जबकि शहरी में 76,92,401 है। जहाँ तक की प्रतिशतता की बात करें तो ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं की साक्षरता प्रतिशत 44.30% है, जबकि वहीं शहरी क्षेत्र में 61.95% है।

**अध्ययन विधिः**

द्वितीयक समंकों का स्रोत सेंसस अंक इंडिया आर्थिक, सांख्यिकी विभाग, पटना जिला, सांख्यिकी रूपरेखा का लेख, जर्नल, पत्र पत्रिकाएँ आंकड़ों का विश्लेषण करना।

**साहित्य समीक्षाः**

सत्यशील अग्रवाल (2016) भारतीय कामकाजी महिलाओं की समस्यागत प्रक्रियाओं में भारत की महिलाओं में शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य के कारण होने वाले प्रसव के दौरान जब उन्हें जीवन गंवाना पड़ता है, तो ऐसे में महिलाओं की स्थिति में सुधार हेतु क्रियाशीलता अपनाई जाती है।

एम.आर.सीगादरिया (2014)- ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाली महिलाओं में कार्यशीलता के कारण कौशल आधारित क्रियाकलाप के दौरान उनमें मानसिक व शारीरिक वृद्धि के गुणात्मक परिणाम देखे जाते हैं।

**कामकाजी महिलाओं में कार्यशीलता की भूमिकाः**

कामकाजी महिलाओं में इस धारणा का व्यापक विकास होते हुए देखा गया है। जीवन के किसी भी पहलू का भौतिक संस्कृति क्षेत्र में नई भूमिका बनती है। यही भूमिका संघर्ष युक्त जीवन को महिलाओं में क्रियाशील करती है। इन महिलाओं में की जाने वाली

अवलोकन के माध्यम से उनमें विकसित होने की पद्धति देखी जाती है।

**कामकाजी महिलाओं की स्थिति:**

एक शोध के अनुसार यह देखा गया है कि महिलाओं की स्थिति में होने वाली सुधार में काफी उतार-चढ़ाव होता है। ऐसा देखा गया है कि कामकाजी महिलाओं में उनकी बौद्धिक उपलब्धि के आलोक में विभिन्न पदों पर आसीन होते भी देखा गया है। महिलाओं में होने वाली बुनियादी शिक्षा ने उनके व्यक्तित्व को काफी रेखांकित किया गया है। बिहार में कामकाजी महिलाओं की प्रतिशत निम्नवत है।

**सारणी -1**

**बिहार में क्रियाशील महिला ( प्रतिशत में ) 1981-2011**

| वर्ष | मुख्य कार्यशील जनसंख्या | सीमांत कार्यशील जनसंख्या | कार्यशील जनसंख्या |
|---|---|---|---|
| 1981 | 9.40 | 11.19 | 76.25 |
| 1991 | 12.38 | 13.14 | 71.48 |
| 2001 | 16.34 | 16.24 | 64.63 |
| 2011 | 34.34 | 17.30 | 62.35 |

**सारणी -2**

**कुल जनसंख्या में कार्यशील जनसंख्या का प्रतिशत**

| श्रेणी | बिहार | | भारत | |
|---|---|---|---|---|
| | कार्यशील पुरुष | कार्यशील महिला | कार्यशील पुरुष | कार्यशील महिला |
| कुल कार्यशील जनसंख्या | 42.2 | 36.7 | 33.1 | 23.4 |
| मुख्य कार्यशील जनसंख्या | 68.3 | 73.1 | 47.2 | 54.3 |
| सीमांत कार्यशील जनसंख्या | 23.4 | 22.4 | 48.2 | 38.3 |
| काश्तकार | 42.3 | 23.6 | 50.3 | 23.0 |
| कृषि श्रमिक | 15.2 | 28.0 | 23.2 | 3.02 |
| लघु उद्योग श्रमिक | 3.4 | 2.3 | 2.1 | 3.6 |
| अन्य श्रमिक | 31.4 | 42.3 | 14.7 | 27.1 |

**सारणी -2**

**बिहार में व्यावसायिक जनसंख्या प्रतिशत 1981-2011**

| वर्ष | मुख्य कार्यशील जनसंख्या | | | सीमांत कार्यशील जनसंख्या | | | कार्यशील जनसंख्या | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | कुल | पुरुष | महिला | कुल | पुरुष | महिला | कुल | पुरुष | महिला |
| 1981 | - | 43.10 | 8.55 | - | 1.00 | 10.14 | - | 44.77 | 76.25 |
| 1991 | - | 44.33 | 11.08 | - | 0.3 | 12.64 | - | 47.34 | 70.48 |
| 2001 | - | 40.60 | 13.92 | - | 4.50 | 14.38 | - | - | - |
| 2011 | - | 48.48 | 33.00 | - | 14.34 | 45.72 | - | - | - |

वर्ष 2009-2010 के दौरान राष्ट्रीय महिला आयोग ने महिलाओं से संबंधित समस्याओं और उनके अधिकारों की रक्षा के बारे में जागरूकता पैदा करने से संबंधित विभिन्न विषयों पर कार्यक्रमों को प्रायोजित किया। पिछड़े और अविकसित ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ अधिकांश लोग अशिक्षित और रूढ़िवादी हैं, महिलाओं से संबंधित मुद्दों के बारे में जागरूकता पैदा करने पर विशेष जोर दिया गया है।

**सारणी -4**

| क्रम | राज्य | आयोजित किए गए विधिक जागरूकता कार्यक्रमों की कुल संख्या | आयोजित की गई पारिवारिक महिल संख्या लोक अदालतों की कुल संख्या |
|---|---|---|---|
| 1 | असम | 22 | - |
| 2 | बिहार | 12 | - |
| 3 | दिल्ली | 17 | - |
| 4 | राजस्थान | 36 | - |

**निष्कर्ष:**

पटना जिला के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रें में जनजातीय महिलाओं के उनके सामाजिक और राजनीतिक स्थिति चुनौती पूर्ण। करीब 200 परिवार गरीबी रेखा से नीचे जीवन-यापन करने को बाध्य है। ऐसे में इस सभी वर्ग के लोग कर्ज के बोझ से दबे है और उनके लिए साहूकार ऋण प्राप्त करने का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। अधिकांश चयनित महिलाएँ निरक्षर हैं। केवल कुछ महिलाएँ मैट्रिक की उपाधि प्राप्त की हैं। चूंकि महिलाएँ आर्थिक क्रियाकलापों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, पर फिर भी इनके निर्णय की प्रक्रिया में उनकी भूमिका नगण्य है। अध्ययन के माध्यम से यह भी प्राप्त हुआ है कि समय के साथ महिलाओं के साथ हिंसा में भी क्रमशः वृद्धि हुई है। यहाँ पर यह भी उल्लेख करना आवश्यक है कि अधिकांश महिलाओं को उनके अधिकारों और सरकारी स्कीमों के बारे में कोई भी जानकारी नहीं है। इसके कारण भी सरकारी स्कीमों से कोई भी लाभ प्राप्त नहीं कर पाती हैं।

**संदर्भ ग्रन्थ सूची:**


1. आर.सी. मजूमदार, द हिस्ट्री एंड कल्चर ऑफ द इंडियन पीपुल, प्रकाशित Vol x 2nd Edition 1981.
2. डॉ० रानी, आशु महिला विकास कार्यक्रम ईनाक्षी पब्लिशर्स जयपुर, पृष्ठ संख्या-19।
3. के.डी. ग्रोगेड सेक्स डिस्ट्रिक्ट डिस्क्रिमिनेशन इन इंडिया ए क्रिटिक (प्रोस्टीटड्शन इन इंडिया), 1995 पृष्ठ संख्या-185।
4. डॉ० वीरेंद्र सिंह यादव नई सहस्त्राब्दी का महिला सशक्तिकरण अवधारणा चिंतन एवं सरोकार भाग -1 एवं 2 ओमेगा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2010 ।
5. Jaypalan N: Women & Human Rights, Discovery Public House, New Delhi, 2006.


✦✦✦